कुँवर नारायण

कुँवर नारायण का जन्म 19 सितंबर 1927 ई० में लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ था । कुँवर नारायण ने कविता लिखने की शुरुआत सन् 1950 के आस-पास की । उन्होंने कविता के अलावा चिंतनपरक लेख, कहानियाँ और सिनेमा तथा अन्य कलाओं पर समीक्षाएँ भी लिखीं हैं, किंतु कविता उनके सृजन-कर्म में हमेशा मुख्य रही । उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - 'चक्रव्यूह', 'परिवेश : हम तुम', 'अपने सामने', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों' (काव्य संग्रह); 'आत्मजयी' (प्रबंधकाव्य); 'आकारों के आस-पास' (कहानी संग्रह); 'आज और आज से पहले' (समीक्षा); 'मेरे साक्षात्कार' (साक्षात्कार) आदि । कुँवर नारायण जी को अनके पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं - 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'कुमारन आशान पुरस्कार', 'व्यास सम्मान', 'प्रेमचंद पुरस्कार', 'लोहिया सम्मान', 'कबीर सम्मान' आदि ।

कुँवर नारायण पूरी तरह नगर संवेदना के कवि हैं । विवरण उनके यहाँ नहीं के बराबर है, पर वैयक्तिक और सामाजिक ऊहापोह का तनाव पूरी व्यंजकता के साथ प्रकट होता है । आज का समय और उसकी यांत्रिकता जिस तरह हर सजीव के अस्तित्व को मिटाकर उसे अपने लपेटे में ले लेना चाहती है, कुँवर नारायण की कविता वहीं से आकार ग्रहण करती है और मनुष्यता और सजीवता के पक्ष में संभावनाओं के द्वार खोलती है । नयी कविता के दौर में, जब प्रबंधकाव्य का स्थान लंबी कविताएँ लेने लगीं, तब कुँवर नारायण ने 'आत्मजयी' जैसा प्रबंधकाव्य रचकर भरपूर प्रतिष्ठा प्राप्त की । उनकी कविताओं में व्यर्थ का उलझाव, अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध के बजाय संयम, परिष्कार और साफ-सुथरापन है । भाषा और विषय की विविधता उनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं । उनमें यथार्थ का खुरदुरापन भी मिलता है और उसका सहज सौंदर्य भी ।

तुरंत काटे गए एक वृक्ष के बहाने पर्यावरण, मनुष्य और सभ्यता के विनाश की अंतर्व्यथा को अभिव्यक्त करती यह कविता आज के समय की अपरिहार्य चिंताओं और संवेदनाओं का रचनात्मक अभिलेख है । यह कविता कुँवर नारायण के कविता संग्रह 'इन दिनों' से संकलित है ।

एक वृक्ष की हत्या

अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था–
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घर के दरवाजे पर तैनात ।

पुराने चमड़े का बना उसका शरीर
वही सख्त जान
झुर्रियोंदार खुरदुरा तना मैलाकुचैला,
राइफिल-सी एक सूखी डाल,
एक पगड़ी फूलपत्तीदार,
पाँवों में फटापुराना जूता,
चरमराता लेकिन अक्खड़ बल-बूता

धूप में बारिश में
गर्मी में सर्दी में
हमेशा चौकन्ना
अपनी खाकी वर्दी में

दूर से ही ललकारता, "कौन ?"
मैं जवाब देता, "दोस्त !"

और पल भर को बैठ जाता
उसकी ठंढी छाँव में

दरअसल शुरू से ही था हमारे अन्देशों में
कहीं एक जानी दुश्मन

कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है देश के दुश्मनों से

बचाना है –
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को जहर हो जाने से :

बचाना है – जंगल को मरुथल हो जाने से,
बचाना है – मनुष्य को जंगल हो जाने से ।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार क्यों लगता था ?
2. वृक्ष और कवि में क्या संवाद होता था ?
3. कविता का समापन करते हुए कवि अपने किन अंदेशों का जिक्र करता है और क्यों ?
4. घर, शहर और देश के बाद कवि किन चीजों को बचाने की बात करता है और क्यों ?
5. कविता की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए एक टिप्पणी लिखें ।
6. व्याख्या करें -

   (क) दूर से ही ललकारता, 'कौन ?' / मैं जवाब देता, 'दोस्त !'

   (ख) बचाना है – जंगल को मरुस्थल हो जाने से / बचाना है - मनुष्य को जंगल हो जाने से ।
7. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
8. इस कविता में एक रूपक की रचना हुई है । रूपक क्या है और यहाँ उसका क्या स्वरूप है ? स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. समकालीन कविता की किताबों से पर्यावरण से संबंधित रचनाएँ एकत्र कीजिए । इसमें पुस्तकालय की मदद लीजिए ।
2. कुँवर नारायण एक विचारशील कवि हैं । उन्होंने 'आत्मजयी' नाम से एक प्रबंधकाव्य लिखा है । उसकी कथा और विषय-वस्तु के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए तथा उसे उपलब्ध कर पढ़िए ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग करें –

   अबकी, हमेशा, लेकिन, दूर, दरअसल, कहीं
2. कविता से विशेषणों का चुनाव करते हुए उनके लिए स्वतंत्र विशेष्य पद दें ।
3. निम्नांकित संज्ञा पदों का प्रकार बताते हुए वाक्य-प्रयोग करें –

   घर, चौकीदार, दरवाजा, डाल, चमड़ा, पगड़ी, जूता, बल-बूता, बारिश, वर्दी, दोस्त, पल, छाँव, अन्देशा, नादिरों, जहर, मरुस्थल, जंगल
4. कविता में प्रयुक्त निम्नांकित पदों के कारक स्पष्ट करें –

   चमड़ा, पाँव, धूप, सर्दी, वर्दी, अन्देशा, शहर, नदी, खाना, मनुष्य

शब्द निधि

अक्खड़ : विपरीत परिस्थितियों में डटा रहने वाला
बल-बूता : शक्ति-सामर्थ्य
अन्देशा : आशंका
नादिरों : नादिरशाह नामक ऐतिहासिक लुटेरे और आक्रमणकारी की तरह के क्रूर व्यक्ति

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA